॥ जैन भवन ॥

तित्थयर

वर्ष : २९ अंक : ९ दिसम्बर २००५

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कर्मास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073 (05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २९ अंक - ९, दिसम्बर २००५

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655 and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा,

|| जैन भवन ||

अनुक्रमणिका

क्र. सं. लेख	लेखक	पृ. सं.
१. जैन संस्कारों के विधि-विधान-का अद्भुत ग्रन्थ	प्रो. सागरमल जैन	५०९
२. कला तीर्थ	रामजीत जैन	५२३
३. वैर का विपाक		५३१

मूल्य - १०.०० रूपये

कवरपृष्ठ : जैसलमेर के ज्ञान भंडार से प्राप्त श्री सरस्वती देवी का चित्र।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

जैन संस्कारों के विधि-विधान का अद्भुत ग्रन्थ 'आचार दिनकर'

प्रो. सागरमल जैन

किसी भी धर्म या साधना पद्धति के दो पक्ष होते है– १. विचार पक्ष और २. आचार पक्ष। जैन धर्म भी एक साधना पद्धति है। अतः उसमें भी इन दोनों पक्षों का समायोजन पाया जाता है। जैन धर्म मूलतः भारतीय श्रमण परम्परा का धर्म है। भारतीय श्रमण परंपरा अध्यात्मपरक रही हैं और यही कारण है कि उसने प्रारम्भ में वैदिक कर्मकाण्डीय परम्परा की आलोचना भी की थी, किन्तु कालान्तर में वैदिक परम्परा के कर्मकाण्डों का प्रभाव उस पर भी आया। यद्यपि प्राचीन काल में जो जैन आगम ग्रन्थ निर्मित हुए, उनमें आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षाएँ ही प्रधान रही हैं, किन्तु कालान्तर में जो जैन ग्रन्थ निर्मित हुए उनमें वैदिक परम्परा के प्रभाव से कर्मकाण्ड का प्रवेश भी हुआ। पहले गौण रूप में और फिर प्रकट रूप में कर्मकाण्ड परक ग्रन्थ जैन परम्परा में भी लिखे गए। भारतीय वैदिक परम्परा में यज्ञ–याग आदि के साथ-साथ गृही जीवन के संस्कारों का भी अपना स्थान रहा हैं और प्रत्येक संस्कार के लिए यज्ञ-याग एवं तत्सम्बन्धी कर्मकाण्ड एवं उसके मंत्र भी प्रचलित रहे। मेरी यह सुस्पष्ट अवधारणा हैं, कि जैन परम्परा में षोडश संस्कारों का और उनके विधि-विधान का जो प्रवेश हुआ है, वह मूलतः हिन्दू परम्परा के प्रभाव से ही आया हैं। यद्यपि परम्परागत अवधारणा यही है, कि गृहस्थों के षोडश संस्कार और उनके विधि-विधान भगवान ऋषभदेव के द्वारा प्रवर्तित किए गए थे। आचारदिनकर में भी वर्धमानसूरि ने इसी परम्परागत मान्यता का उल्लेख किया है। जहाँ तक जैन आगमों का प्रश्न है, उसमें कथापरक आगमों में गर्भाधान संस्कार का तो कोई उल्लेख नहीं है, किन्तु उनमें तीर्थंकरों के जीव के गर्भ में प्रवेश के समय माता द्वारा स्वप्न दर्शन के उल्लेख मिलते है। इसके अतिरिक्त जातकर्म संस्कार, सूर्य–चन्द्र

दर्शन संस्कार, षष्ठी संस्कार, नामकरण संस्कार, विद्याध्यन संस्कार, आदि कुछ संस्कारों के उल्लेख भी उनमें मिलते है, किन्तु वहाँ तत्सम्बन्धी विधि-विधानों का उल्लेख नहीं मिलता है। फिर भी इससे इतना तो सिद्ध होता है कि उस काल में जैन परम्परा में भी संस्कार सम्बन्धी कुछ विधान किए जाते थे। यद्यपि मेरी अवधारणा यही है कि जैन समाज के वृहत् हिन्दू समाज का ही एक अंग होने के कारण जन सामान्य में प्रचलित जो संस्कार आदि की सामाजिक क्रियाएँ थी, वे जैनों द्वारा भी मान्य थी। किन्तु ये संस्कार जैन धर्म की निवृत्तिपरक साधना विधि का अंग रहे होंगे, यह कहना कठिन हैं।

जहाँ तक संस्कार सम्बन्धी स्वतंत्र ग्रंथों की रचना का प्रश्न है, वे आगमिकव्याख्याकाल के पश्चात् निर्मित होने लगे थे। किन्तु उन ग्रन्थों में भी गृहस्थ जीवन सम्बन्धी षोडश संस्कारों का कोई उल्लेख हमें नहीं मिलता है। मात्र दिगम्बर परम्परा में जो पुराणग्रन्थ हैं, किन्तु उनमें इन संस्कारों के विधि-विधान के मात्र संसूचनात्मक कुछ निर्देश ही मिलते हैं। श्वेताम्बर परम्परा में आचार्य हरिभद्र (लगभग आठवीं शती) के ग्रन्थ जैसे अष्टकप्रकरण, पंचाशक प्रकरण, पंचवस्तु आदि में भी विधि-विधान सम्बन्धी कुछ उल्लेख तो मिलते है, किन्तु उनमें जो विधि-विधान सम्बन्धी उल्लेख हैं वे प्रथमतः तो अत्यन्त संक्षिप्त हैं और दूसरे उनमें या तो जिनपूजा, जिनभवन, जिनयात्रा, मुनि दीक्षा आदि से सम्बन्धित ही कुछ विधि-विधान मिलते है या फिर मुनि आचार सम्बन्धी कुछ विधि-विधानों का उल्लेख उनमें हुआ है। गृहस्थ के षोडश संस्कारों का सुव्यवस्थित विवरण हमें आचार्य हरिभद्र के ग्रन्थों में देखने को नहीं मिलता हैं। आचार्य हरिभद्र के पश्चात् नवीं शताब्दी से लेकर बारहवीं शताब्दी तक मुनि आचार सम्बन्धी अनेक ग्रन्थों की रचना हुई। जैसे- पादलिप्तसूरिकृत निर्वाणकालिका, जिनवल्लभसूरि विरचित संघपट्टक, चन्द्रसूरि की सुबोधासमाचारी, तिलकाचार्य कृत समाचारी, हेमचन्द्राचार्य का योगशास्त्र, समाचारीशतक आदि कुछ ग्रन्थ है। किन्तु ये सभी ग्रन्थ भी मुख्यतया साधना परक और मुनि जीवन से सम्बन्धित आचार-विचार का

ही उल्लेख करते है। तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी से विधि-विधान सम्बन्धी जिन ग्रन्थों की रचना हुई उसमें 'विधिमार्गप्रपा' को एक प्रमुख ग्रन्थ के रूप में स्वीकार किया जा सकता हैं। किन्तु इसमें भी जो विधि-विधान वर्णित है, उनका सम्बन्ध मुख्यतः मुनि आचार से ही हैं या फिर किसी सीमा तक जिनभवन, जिनप्रतिमा, प्रतिष्ठा आदि से सम्बन्धित उल्लेख हैं। इसी प्रकार दिगम्बर परम्परा में पं. आशाधर के सागरधर्मामृत एवं अणगारधर्मामृत में तथा प्रतिष्ठाकल्प में कुछ विधि-विधानों का उल्लेख हुआ हैं। सागार-धर्मामृत में गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित कुछ विधि-विधान चर्चित अवश्य हैं, किन्तु उसमें भी गर्भाधान, पुंसवन, जातकर्म, षष्ठीपूजा, अन्नप्राशन, कर्णवेध आदि का कोई विशेष उल्लेख नहीं मिलता हैं। गृहस्थ जीवन, मुनिजीवन और सामान्य विधि-विधान से सम्बन्धित मेरी जानकारी में यदि कोई प्रथम ग्रन्थ हैं तो वह वर्धमानसूरीकृत आचारदिनकर (वि. सं. १४६८) ही हैं।

ग्रन्थ के रचियता और रचनाकाल : जहाँ तक इस ग्रन्थ के रचयिता एवं काल का प्रश्न हैं, इस ग्रन्थ की प्रशस्ति में स्पष्ट रूप से यह उल्लेख किया गया है कि वि. सं. १४६८ में जालंधर नगर (पंजाब) में इस ग्रन्थ की रचना हुई। ग्रन्थ प्रशस्ति से यह भी स्पष्ट होता है कि यह ग्रन्थ अभयदेवसूरि के शिष्य वर्धमानसूरि द्वारा रचित हैं। अभयदेवसूरि और वर्धमानसूरि जैसे प्रसिद्ध नामों को देखकर सामान्यतयाः चन्द्रकुल के वर्धमानसूरि, नवांगीटीकाकार अभयदेवसूरि का स्मरण हो आता हैं, किन्तु आचार दिनकर के कर्त्ता वर्धमानसूरि इनसे भिन्न हैं। अपनी सम्पूर्ण वंश परम्परा का उल्लेख करते हुए उन्होंने अपने को खरतरगच्छ की रूद्रपल्ली शाखा के अभयदेवसूरी (तृतीय) का शिष्य बताया है। ग्रन्थ प्रशस्ति में उन्होंने जो अपना गुरू परम्परा सूचित की है, वह इस प्रकार है :-

आचार्य हरिभद्र

देवचन्द्रसूरि

नेमिचन्द्रसूरि

उद्योतनसूरि
|
वर्धमानसूरि
|
जिनेश्वरसूरि
|
अभयदेवसूरि (प्रथम)
|
जिनवल्लभसूरि

इसके पश्चात् जिनवल्लभ के शिष्य जिनशेखर से रूद्रपल्ली शाखा की स्थापना को बताते हुए, उसकी आचार्य परम्परा निम्न प्रकार से दी है :-

जिनशेखरसूरि
|
पद्मचंद्रसूरि
|
विजयचंद्रसूरि
|
अभयदेवसूरि (द्वितीय) (१२वीं से १३वीं शती)
|
देवभद्रसूरि
|
प्रभानंदसूरि (वि. सं. १३११)
|
जिनभद्रसूरि
|
जगततिलकसूरि
|
गुणचन्द्रसूरि (१४१५-२१)
|
अभयदेवसूरि (तृतीय)

जयनंदसूरि — वर्धमानसूरि (१५वीं शती) वि.सं. १४६८

प्रस्तुत कृति में वर्धमानसूरि ने जो अपनी गुरू परम्परा दी है, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वे खरतरगच्छ की रूद्रपल्ली शाखा से सम्बन्धित थे। ज्ञातव्य हैं कि जिनवल्लभसूरि के गुरू भ्राता जिनशेखरसूरि ने जिनदत्तसूरि द्वारा जिनचंद्रसूरि को अपने पट्ट पर स्थापित करने से रुष्ट होकर उनसे पृथक हो गए और उन्होंने रूद्रपल्ली शाखा की स्थापना की। ऐसा लगता हैं कि जहाँ जिनदत्तसूरि की परम्परा ने उत्तर-पश्चिम भारत को अपना प्रभाव

क्षेत्र बनाया, वही जिनशेखर सूरि ने पूर्वोत्तर क्षेत्र को अपना प्रभाव क्षेत्र बनाकर विचरण किया। रूद्रपल्ली शाखा का उद्‌भव लखनऊ और अयोध्या के मध्यवर्ती रुद्रपल्ली नामक नगर में हुआ और इसीलिए इसका नाम रूद्रपल्ली शाखा पड़ा। वर्तमान में भी यह स्थान रूद्रौली के नाम से प्रसिद्ध हैं- – इस शाखा का प्रभाव क्षेत्र पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाब तक रहा। प्रस्तुत आचारदिनकर की प्रशस्ति से भी यह स्पष्ट हो जाता हैं कि इस ग्रन्थ की रचना पंजाब के जालंधर नगर के नंदनवन में हुआ, जो रूद्रपल्ली शाखा का प्रभाव क्षेत्र रहा होगा। यह स्पष्ट है कि रूद्रपल्ली स्वतंत्र गच्छ न होकर खरतरगच्छ का ही एक विभाग था। साहित्यिक दृष्टि से रूद्रपल्ली शाखा के आचार्यों द्वारा अनेक ग्रंथों की रचना हुई। अभयदेवसूरि (द्वितीय) द्वारा जयन्तविजय महाकाव्य वि. सं. १२७८ में रचा गया। अभयदेवसूरि (द्वितीय) के पट्टधर देवभद्रसूरि के शिष्य तिलकसूरि ने गौतमपृच्छावृत्ति की रचना की है। उनके पश्चात् प्रभानंदसूरि ने ऋषभपंचाशिकावृत्ति और वीतरागवृत्ति की रचना की। इसी क्रम में आगे संघतिलकसूरि हुए उन्होंने सम्यक्त्वसप्ततिटीका, वर्धमानविद्याकल्प, षट्‌दर्शनसमुच्चयवृत्ति की रचना की। इनके द्वारा रचित ग्रन्थों में वीरकल्प, कुमारपालचरित्र, शीलतरंगिनीवृत्ति, कन्यानयनमहावीरप्रतिमाकल्प आदि कृतियाँ भी मिलती है कन्यानयनमहावीर प्रतिमा कल्प की रचना से भी यह स्पष्ट हो जाता हैं, कि इस शाखा का प्रभाव क्षेत्र पश्चिमी उत्तरप्रदेश था, क्योंकि यह कल्प वर्तमान कन्नौज के भगवान महावीर के जिनालय के सम्बन्ध में लिखा गया है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्धमानसूरि जिस रूद्रपल्ली शाखा में हुए वह शाखा विद्वत मुनिजनों और आचार्यों से समृद्ध रही हैं और यही कारण हैं कि उन्होंने आचारदिनकर जैसे विधि-विधान सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना की। आचारदिनकर के अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि उस पर श्वेताम्बर परम्परा के साथ ही दिगम्बर परम्परा का भी प्रभाव रहा हैं। यह स्पष्ट है कि पश्चिमी उत्तरप्रदेश और उससे लगे हुए बुन्देलखण्ड तथा पूर्वी हरियाणा में दिगम्बर परम्परा का भी प्रभाव था। अतः यह स्वाभाविक था कि आचारदिनकर

पर दिगम्बर परम्परा का भी प्रभाव आया। स्वयं वर्धमानसूरि ने भी यह स्वीकार किया है, कि मैंने दिगम्बर एवं श्वेताम्बर परम्परा के ग्रन्थों तथा उनमें प्रचलित इन विधानों की जीवित परम्परा को देखकर ही इस ग्रंथ की रचना की है। ग्रन्थ प्रशस्तियों के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि रूद्रपल्ली शाखा लगभग बारहवीं शताब्दी के अस्तित्व में आई और उन्नीसवीं शताब्दी के अस्तित्व में बनी रही। यद्यपि यह सत्य है कि सोलहवीं शती के पश्चात् इस शाखा में कोई प्रभावशाली विद्वान आचार्य नहीं हुआ, किन्तु यति परम्परा और उसके पश्चात् कुलगुरु (मथेण) के रूप में यह शाखा लगभग उन्नीसवीं शताब्दी तक जीवित रही।

ग्रन्थकार वर्धमानसूरि का परिचय : जहाँ तक प्रस्तुत कृति के रचयिता वर्धमानसूरि का प्रश्न हैं, उनके गृही जीवन के सम्बन्ध में हमें न तो इस ग्रन्थ की प्रशस्ति से और न किसी अन्य साधन से कोई सूचना प्राप्त होती है। केवल इतना ही कहा जा सकता है कि इनका जन्म रूद्रपल्ली शाखा के प्रभाव क्षेत्र में ही कहीं हुआ होगा। जालन्धर इनका जन्म रुद्रपल्ली शाखा के प्रभाव क्षेत्र में ही कहीं हुआ होगा। जालन्धर (पंजाब) में ग्रन्थ रचना करने से भी यह स्पष्ट हो जाता है कि इनका विवरण और स्थिरता का क्षेत्र पंजाब और हरियाणा रहा होगा। इनके गुरू अभयदेवसूरि (तृतीय) द्वारा फाल्गुन सुद तीज, शुक्रवार वि.सं. १४३२ में अंजनश्लाका की हुई शान्तिनाथ भगवान की धातु की प्रतिमा, आदिनाथ जिनालय पूना में उपलब्ध हैं। इससे यह सुनिश्चित हैं कि वर्धमानसूरि विक्रम की पन्द्रवहीं शताब्दी में हुए। इनके गुरू अभयदेवसूरि द्वारा दीक्षित होने के सम्बन्ध में भी किसी प्रकार की कोई शंका नहीं की जा सकती। किन्तु इनकी दीक्षा कब और कहाँ हुई इस सम्बन्ध में अधिक कुछ कहना सम्भव नहीं है।

ग्रंथकर्त्ता और उसकी परम्परा की इस चर्चा के पश्चात् हम ग्रंथ के सम्बन्ध में कुछ विचार करेंगे।

ग्रन्थ की विषयवस्तु : वर्धमानसूरिकृत आचारदिनकर नामक यह ग्रन्थ संस्कृत एवं प्राकृत भाषा में रचित है। भाषा की दृष्टि से इसकी संस्कृत

भाषा अधिक प्रांजल नहीं हैं और न अलंकार आदि के घटाटोप से क्लिष्ट हैं। ग्रन्थ सामान्यतयाः सरल संस्कृत में ही रचित है। यद्यपि जहाँ-जहाँ आगम और प्राचीन आचार्यों के ग्रंथों के प्रमाण प्रस्तुत करने का प्रश्न उपस्थित हुआ है, वहाँ-वहाँ इसमें प्राकृत पद्य और गद्य का पूरा का पूरा ग्रन्थ ही अवतरित कर दिया गया है, जैसे प्रायश्चित विधान के सम्बन्ध में जीतकल्प, श्राद्धजीतकल्प आदि ग्रन्थ उद्धरित हुए। ग्रन्थ की जो प्रति प्रथमतः प्रकाशित हुई है, उसमें संस्कृत भाषा सम्बन्धी अनेक अशुद्धियाँ देखने में आती हैं—इन अशुद्धियों के कारण का यदि हम विचार करे तो दो संभावनाएँ प्रतीत होती हैं— प्रथमतः यह हो सकता हैं कि जिस हस्त प्रत के आधार पर यह ग्रन्थ छपाया गया हो वहीं अशुद्ध रही हो, दूसरे यह भी सम्भावना हो सकती है कि प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रुफ रीडिंग सम्यक् प्रकार से नहीं किया गया हो । चूँकि इस ग्रंथ का अन्य कोई संस्करण भी प्रकाशित नहीं हुआ है और न कोई हस्तप्रत ही सहज उपलब्ध है—ऐसी स्थिति में पूज्या साध्वी जी ने इस अशुद्ध प्रत के आधार पर ही यह अनुवाद करने का प्रयत्न किया हैं, अतः अनुवाद में यत्र-तत्र स्खलन की कुछ सम्भावनाएँ हो सकती है क्योंकि अशुद्ध पाठों के आधार पर सम्यक् अर्थ का निर्धारण करना एक कठिन कार्य होता हैं फिर भी इस दिशा में जो यह प्रयत्न हुआ हैं, वह सराहनीय ही कहा जाएगा।

यद्यपि जैन परम्परा में विधि-विधान से सम्बन्धित अनेक ग्रन्थों की रचना हुई है। आचार्य हरिभद्रसूरि के पंचवस्तु प्रकरण से लेकर आचारदिनकर तक विधि-विधान सम्बन्धी ग्रंथों की समृद्ध परम्परा रही हैं, किन्तु आचारदिनकर के पूर्व जो विधि-विधान सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे गए उन ग्रंथों में दो ही पक्ष प्रबल रहे- १. मुनि आचार सम्बन्धी ग्रंथ और २. पूजा पाठ, प्रतिष्ठा सम्बन्धी ग्रन्थ। निर्वाणकलिका, विधिमार्गप्रपा, समाचारी, सुबोधासमाचारी आदि ग्रन्थों में हमें या तो दीक्षा आदि मुनि जीवन से सम्बन्धित विधि-विधान का उल्लेख मिलता हैं या फिर मन्दिर एवं मूर्ति निर्माण, मूर्तिप्रतिष्ठा, मूर्ति पूजा आदि से सम्बन्धित जो विधि-विधान मिलते हैं, उनमें से मुख्य रूप से

सामायिक, पौषध, प्रतिक्रमण एवं उपधान से सम्बन्धित ही विधि-विधान मिलते हैं। सामान्यत: गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित संस्कारों के विधि-विधानों का उनमें प्राय: अभाव ही देखा जाता हैं। यद्यपि आगम युग से ही जन्म, नामकरण आदि सम्बन्धी कुछ क्रियाओं (संस्कारों) के उल्लेख मिलते हैं, किन्तु तत्संबन्धी जैन परम्परा के अनुकूल विधि-विधान क्या थे? इसकी कोई चर्चा नहीं मिलती है।

दिगम्बर परम्परा के पुराण साहित्य में भी इन संस्कारों के उल्लेख तथा उनके करने सम्बन्धी कुछ निर्देश तो मिलते हैं, किन्तु वहाँ भी एक सुव्यवस्थित समग्र विधि-विधान का प्राय: अभाव ही देखा जाता हैं। वर्धमानसूरि का आचारदिनकर जैन परम्परा का ऐसा प्रथम ग्रंथ हैं, जिसमें गृहस्थ के षोडश संस्कारों सम्बन्धी विधि-विधानों का सुस्पष्ट विवेचन हुआ है।

आचार दिनकर नामक यह ग्रन्थ चालीस उदयों में विभाजित हैं। आचार्य वर्धमानसूरि ने स्वयं ही इन चालीस उदयों को तीन भागों में वर्गीकृत किया हैं। प्रथम विभाग में गृहस्थ सम्बन्धी षोडश संस्कारों का विवेचन हैं, दूसरे विभाग में मुनि जीवन से सम्बन्धित षोडश संस्कारों का विवेचन हैं और अन्तिम तृतीय खण्ड के आठ उदयों में गृहस्थ और मुनि दोनों द्वारा सामान्य रूप से आचरणीय आठ विधि-विधानों का उल्लेख हैं। इस ग्रन्थ में वर्णित चालीस विधि-विधानों को निम्न सूची द्वारा जाना जा सकता हैं :-

(अ) गृहस्थ सम्बन्धी	**(ब) मुनि सम्बन्धी**	**(स) मुनि एवं गृहस्थ सम्बन्धी**
१. गर्भाधान संस्कार	१. ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण संस्कार	१. प्रतिष्ठा विधि
२. पुसवन संस्कार	२. क्षुल्लक विधि	२. शान्तिक-कर्म विधि
३. जातिकर्म संस्कार	३. प्रव्रज्या विधि	३. पौष्टिक-कर्म विधि
४. सूर्य-चन्द्र दर्शन संस्कार	४. उपस्थापना विधि	४. बलि विधान
५. क्षीराशन संस्कार	५. योगोद्वहन विधि	५. प्रायश्चित विधि
६. षष्ठी संस्कार	६. वाचनाग्रहण विधि	६. आवश्यक विधि
७. शुचि संस्कार	७. वाचनानुज्ञा विधि	७. तप विधि
८. नामकरण संस्कार	८. उपाध्यायपद स्थापना विधि	८. पदारोपण विधि

९. अन्न प्राशन संस्कार	९. आचार्य पद स्थापना विधि	
१०. कर्णवेध संस्कार	१०. प्रतिमाउद्वहन विधि	
११. चूडाकरण संस्कार	११. व्रतिनी व्रतदान विधि	
१२. उपनयन संस्कार	१२. प्रवर्तिनीपद स्थापना विधि	
१३. विद्यारम्भ संस्कार	१३. महत्तरापद स्थापना विधि	
१४. विवाह संस्कार	१४. अहोरात्र चर्या विधि	
१५. व्रतारोपण संस्कार	१५. ऋतुचर्या विधि	
१६. अन्त्य संस्कार	१६. अन्तसंलेखना विधि	

तुलनात्मक विवेचन : जहाँ तक प्रस्तुत कृति में वर्णित गृहस्थ जीवन सम्बन्धी षोडश संस्कारों का प्रश्न हैं, ये संस्कार सम्पूर्ण भारतीय समाज में प्रचलित रहे हैं, सत्य यह है कि ये संस्कार धार्मिक संस्कार न होकर सामाजिक संस्कार रहे है और यही कारण है कि भारतीय समाज के श्रमण धर्मों में भी इनका उल्लेख मिलता है। जैन परम्परा के आगमों जैसे ज्ञाताधर्म कथा, औपपातिक, राजप्रश्नीय, कल्पसूत्र आदि में इनमें से कुछ संस्कारों का जैसे जातकर्म या जन्म संस्कार, सूर्य-चन्द्र दर्शन संस्कार, षष्ठी संस्कार, नामकरण संस्कार, विद्यारम्भ संस्कार आदि का उल्लेख मिलता है, फिर भी जहाँ आगमों का प्रश्न हैं उनमें मात्र इनके नामोल्लेख ही है। तत्सम्बन्धी विधि-विधानों का विस्तृत विवेचन नहीं है। जैन आगमों में गर्भाधान संस्कार का उल्लेख न होकर शिशु के गर्भ में आने पर माता द्वारा स्वप्नदर्शन का ही उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार विवाह के भी कुछ उल्लेख है, किन्तु उनमें व्यक्ति के लिए विवाह की अनिवार्यता का प्रतिपादन नहीं हैं और न तत्सम्बन्धी किसी विधि विधान का उल्लेख हैं। दिगम्बर परम्परा के पुराण ग्रन्थों में भी इनमें से अधिकांश संस्कारों का उल्लेख हुआ हैं, किन्तु उपनयन आदि संस्कार जो मूलतः हिन्दू परम्परा से ही सम्बन्धित रहे हैं, उनके उल्लेख विरल है। दिगम्बर परम्परा में मात्र यह निर्देश मिलता हैं कि भगवान ऋषभदेव के पुत्र भरत चक्रवर्ती ने व्रती श्रावकों को स्वर्ण का उपनयन सूत्र प्रदान किया था। वर्तमान में भी दिगम्बर परम्परा में उपनयन (जनेउ) धारण की परम्परा है। इस प्रकार जैन धर्म की श्वेताम्बर एवं

दिगम्बर दोनों ही प्रमुख परम्पराओं में एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में इन संस्कारों के निर्देश तो हैं, किन्तु मूलभूत ग्रन्थों में तत्सम्बन्धी किसी भी विधि-विधान का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है। वर्धमान सूरि की प्रस्तुत कृति का यह वैशिष्ट्य है, कि उसमें सर्वप्रथम इन षोडश संस्कारों का विधि-विधान पूर्वक उल्लेख किया गया है। जहाँ तक मेरी जानकारी हैं, वर्धमानसूरिकृत इस आचारदिनकर नामक ग्रन्थ से पूर्ववर्ती किसी भी जैन ग्रन्थ में इन षोडश संस्कारों का उनके विधि-विधान पूर्वक उल्लेख नहीं हुआ। मात्र यहीं नहीं परवर्ती ग्रन्थों में भी ऐसा सुव्यवस्थित विवेचन उपलब्ध नहीं होता है। यद्यपि दिगम्बर परम्परा में षोडश संस्कार विधि, जैन विवाहविधि आदि के विधि-विधान से सम्बन्धित कुछ ग्रन्थ हिन्दी भाषा में प्रकाशित हैं, किन्तु जहाँ तक मेरी जानकारी है, श्वेताम्बर परम्परा में वर्धमानसूरि के पूर्व और उनके पश्चात् भी इन षोडश संस्कारों से सम्बन्धित कोई ग्रन्थ नहीं लिखा गया। इस प्रकार जैन परम्परा में षोडश संस्कारों का विधिपूर्वक उल्लेख करने वाला यही एकमात्र अद्वितीय ग्रन्थ हैं। वर्धमानसूरि की यह विशेषता हैं, कि उन्होंने गर्भाधान संस्कार को हिन्दू परम्परा के सीमान्त संस्कार के पूर्व रूप में स्वीकार किया हैं और यह माना हैं कि गर्भ के स्पष्ट लक्षण प्रकट होने पर ही यह संस्कार किया जाना चाहिए। इस प्रकार उनके द्वारा प्रस्तुत गर्भाधान संस्कार वस्तुतः गर्भाधान संस्कार न होकर सीमान्त संस्कार का ही पूर्व रूप हैं। वर्धमानसूरि ने गृहस्थ सम्बन्धी जिन षोडश संस्कारों का विधान किया हैं, उनमें से व्रतारोपण को छोड़कर शेष सभी संस्कार हिन्दू परम्परा के समरूप ही प्रस्तुत किए गए हैं, यद्यपि संस्कार सम्बन्धी विधि-विधान में जैनत्व को प्रधानता दी गई हैं और तत्सम्बन्धी मंत्र भी जैन परम्परा के अनुरूप ही प्रस्तुत किए गए हैं।

वर्धमानसूरि द्वारा विरचित षोडश संस्कारों और हिन्दू परम्परा में प्रचलित षोडश संस्कारों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर हम यह पाते हैं कि इस ग्रन्थ में हिन्दू परम्परा के षोडश संस्कारों का मात्र जैनीकरण किया गया हैं। किन्तु जहाँ हिन्दू परम्परा में विवाह संस्कार के पश्चात् व्रतारोपण संस्कार

का उल्लेख किया है। व्रतारोपण संस्कार वानप्रस्थ संस्कार से भिन्न है, क्योंकि यह गृहस्थ जीवन में ही स्वीकार किया जाता हैं। पुनः वह ब्रह्मचर्य व्रतग्रहण और क्षुल्लक दीक्षा से भी भिन्न हैं, क्योंकि दोनों में मौलिक दृष्टि से यह भेद है कि ब्रह्मचर्य व्रतग्रहण तथा क्षुल्लक दीक्षा दोनों में ही स्त्री का त्याग अपेक्षित होता हैं, जबकि वानप्रस्थाश्रम स्त्री के साथ ही स्वीकार किया जाता हैं। यद्यपि इसकी क्षुल्लक दीक्षा से इस अर्थ में समानता हैं कि दोनों ही सन्यास की पूर्व अवस्था एवं गृह त्याग रूप हैं।

वर्धमानसूरिकृत आचारदिनकर के दूसरे खण्ड में मुनि जीवन से सम्बन्धित षोडश संस्कारों का उल्लेख हैं। इन संस्कारों में जहाँ एक और मुनि जीवन की साधना एवं शास्त्राध्ययन से सम्बन्धित विधि-विधान हैं, वहीं दूसरी ओर साधु-साध्वी के संघ संचालन सम्बन्धी विविध पद एवं उन पदों पर स्थापना की विधि दी गई है। मुनि जीवन से सम्बन्धित ये विधि-विधान वस्तुतः जैन संघ की अपनी व्यवस्था है। अतः अन्य परम्पराओं में तत्सम्बन्धी विधि-विधानों का प्रायः अभाव ही देखा जाता है। वर्धमानसूरि के आचारदिनकर नामक ग्रन्थ में इस सम्बन्ध में यह विशेषता हैं कि वह मुनि की प्रव्रज्या विधि के पूर्व, ब्रह्मचर्य व्रत संस्कार और क्षुल्लक दीक्षा विधि को प्रस्तुत करता है। श्वेताम्बर परम्परा के उनसे पूर्ववर्ती किसी भी ग्रन्थ में इस प्रकार विधि-विधान का कहीं भी उल्लेख नहीं है, यद्यपि प्राचीन आगम ग्रन्थों जैसे दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि में क्षुल्लकाचार नामक अध्ययय मिलते हैं, किन्तु वे मूलतः नवदीक्षित मुनि के आचार का ही विवेचन प्रस्तुत करते है। यद्यपि दिगम्बर परम्परा में ब्रह्मचर्य प्रतिमा और क्षुल्लक दीक्षा के निर्देश मिलते हैं और श्वेताम्बर परम्परा में भी गृहस्थों द्वारा ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकार किया जाता है और तत्सम्बन्धी प्रतिज्ञा के आलापक भी है, किन्तु क्षुल्लक दीक्षा सम्बन्धी कोई विधि-विधान मूल आगम साहित्य में नहीं है मात्र तत्सम्बन्धी आचार का उल्लेख हैं। श्वेताम्बर परम्परा में सामायिक चारित्र ग्रहण रूप जिस छोटी दीक्षा का और छेदोपस्थापनीय चारित्र ग्रहण रूप बड़ी दीक्षा के जो उल्लेख हैं, वे प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रव्रज्याविधि और उपस्थापनाविधि के नाम से विवेचित है।

वर्धमानसूरि की यह विशेषता हैं कि वे ब्रह्मचर्य व्रत से संस्कारित या क्षुल्लक दीक्षा गृहीत व्यक्ति को गृहस्थों के व्रतारोपण को छोड़कर शेष पन्द्रह संस्कारों को करवाने की अनुमति प्रदान करते है यहीं नहीं यह भी माना गया है कि मुनि की अनुपस्थिति में क्षुल्लक भी गृहस्थ को व्रतारोपण करवा सकता है। उन्होंने क्षुल्लक का जो स्वरूप वर्णित किया है, वह भी वर्तमान में दिगम्बर परम्परा की क्षुल्लक दीक्षा से भिन्न ही हैं। क्योंकि दिगम्बर परम्परा में क्षुल्लक दीक्षा आजीवन के लिए होती है। साथ ही क्षुल्लक को गृहस्थ के संस्कार करवाने का अधिकार भी नहीं है। यद्यपि क्षुल्लक के जो कार्य वर्धमानसूरि ने बताए हैं, वे कार्य दिगम्बर परम्परा में भट्टारकों द्वारा सम्पन्न किए जाते हैं। गृहस्थ के विधि-विधानों की चर्चा करते हुए, उन्होंने जैन ब्राह्मण एवं क्षुल्लक का बार-बार उल्लेख किया है, इससे ऐसा लगता है कि प्रस्तुत कृति के निर्माण में दिगम्बर परम्परा का भी प्रभाव रहा है। स्वयं उन्होंने अपने उपोद्घात में भी इस तथ्य को स्वीकार किया है कि मैंने श्वेताम्बर एवं दिगम्बर सम्प्रदाय में प्रचलित जीवन्त परम्परा को और उनके ग्रन्थों को देखकर इस ग्रन्थ की रचना की है। वर्धमानसूरि गृहस्थ सम्बन्धी संस्कार हेतु जैन ब्राह्मण की बात करते है किन्तु श्वेताम्बर परम्परा में जैन ब्राह्मण कोई व्यवस्था रही है, ऐसा उस परम्परा के ग्रन्थों से ज्ञात नहीं होता है। सम्भावना यहीं है श्वेताम्बर परम्परा शिथिल यतियों के द्वारा वैवाहिक जीवन स्वीकार करने पर जो मत्थेण, गौरजी महात्मा आदि की जो परम्परा प्रचलित हुई थी और जो गृहस्थों के कुलगुरु का कार्य भी करते थे, वर्धमानसूरि का जैन ब्राह्मण से आशय उन्हीं से होगा। लगभग ५० वर्ष पूर्व तक ये लोग यह कार्य सम्पन्न करवाते थे।

इस कृति के तृतीय खण्ड में मुनि एवं गृहस्थ दोनों से सम्बन्धित आठ संस्कारों का उल्लेख किया हैं, किन्तु यदि हम गंभीरता से विचार करें तो प्रतिष्ठा विधि, शान्तिक कर्म, पौष्टिक कर्म एवं बलिविधान इन चार का सम्बन्ध मुख्यतः गृहस्थों से है, क्योंकि ये संस्कार गृहस्थों द्वारा और उनके लिए ही सम्पन्न किये जाते है यद्यपि प्रतिष्ठा विधि की अवश्य कुछ ऐसी

क्रियाएँ है, जिन्हें आचार्य या मुनिजन भी सम्पन्न करते हैं। जहाँ तक प्रायश्चित विधान का प्रश्न है, हम देखते हैं कि जैन आगमों में और विशेष रूप से छेदसूत्रों यथा व्यवहारसूत्र, निशीथसूत्र, जीतकल्प आदि में और उनकी निर्युक्ति, भाष्य और चूर्णि में सामान्यतः मुनि की ही प्रायश्चित विधि का उल्लेख हैं। गृहस्थ की प्रायश्चित विधि का सर्वप्रथम उल्लेख हमें श्राद्धजीतकल्प में मिलता है। दिगम्बर परम्परा के छेदपिण्ड शास्त्र में भी मुनि के साथ-साथ गृहस्थ के प्रायश्चित सम्बन्धी विधि-विधान का उल्लेख है। आचारदिनकर में प्रायश्चित विधि को प्रस्तुत करते हुए वर्धमानसूरि ने अपनी तरफ से कोई बात न कहकर जीतकल्प, श्रावक जीतकल्प आदि प्राचीन ग्रन्थों को ही पूर्णतः उद्घृत कर दिया है। आवश्यक विधि मूलतः श्रावक प्रतिक्रमण विधि और साधु प्रतिक्रमण विधि को ही प्रस्तुत करती है। जहाँ तक तप विधि का सम्बन्ध है, इसमें वर्धमानसूरि ने छः वाह्य एवं छः आभ्यन्तर तपों के उल्लेख के साथ-साथ आगम युग से लेकर अपने काल तक प्रचलित विभिन्न तपों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया हैं जहाँ तक पदारोपण विधि का प्रश्न हैं यह विधि मूलतः सामाजिक जीवन और राज्य प्रशासन में प्रचलित पदों पर आरोपण की विधि को ही प्रस्तुत करती है। इस विधि में यह विशेषता है कि इसमें राज्य-हस्ती, राज्य-अश्व आदि के भी पदारोपण का उल्लेख मिलता हैं ऐसा लगता है कि वर्धमानसूरि ने उस युग में प्रचलित व्यवस्था से ही इन विधियों का ग्रहण किया है। जहाँ तक प्रतिष्ठा विधि, शान्तिक कर्म, पौष्टिक कर्म एवं बलि विधान का प्रश्न है। ये चारों ही विधियाँ मेरी दृष्टि में जैनाचार्यों ने हिन्दू परम्परा से ग्रहीत करके उनका जैनीकरण मात्र किया गया है। क्योंकि प्रतिष्ठा विधि में तीर्थंकर परमात्मा को छोड़कर जिन अन्य देवी देवताओं जैसे– दिग्पाल, नवग्रह, क्षेत्रपाल, यक्ष-यक्षिणी आदि के जो उल्लेख हैं, वे हिन्दू परम्परा से प्रभावित लगते है या उनके समरूप भी कहे जा सकते हैं। ये सभी देवता हिन्दू देव मण्डल से जैन देव मण्डल में समाहित किये गये हैं। इसी प्रकार कूप, तडाग, भवन आदि की प्रतिष्ठा विधि भी उन्होंने हिन्दू परम्परा से ही ग्रहण की है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वर्धमानसूरि ने एक व्यापक दृष्टि को समक्ष रखकर जैन परम्परा और तत्कालीन समाज व्यवस्था में प्रचलित विविध विधि-विधानों का इस ग्रन्थ में विधिवत् और व्यवस्थित विवेचन प्रस्तुत किया है जैन धर्म में उनसे पूर्ववर्ती कुछ आचार्यों ने साधु जीवन से सम्बन्धित विधि-विधानों का एवं जिनबिंब की प्रतिष्ठा से सम्बन्धित विधि-विधान पर तो ग्रन्थ लिखे थे, किन्तु सामाजिक जीवन से सम्बन्धित संस्कारों के विधि-विधानों पर इतना अधिक व्यापक और प्रामाणिक ग्रन्थ लिखने का प्रयत्न सम्भवतः वर्धमानसूरि ने ही किया है। वस्तुतः जहाँ तक मेरी जानकारी है, समग्र जैन परम्परा में विधि-विधानों को लेकर आचारदिनकर ही एक ऐसा आचार ग्रन्थ हैं जो व्यापक दृष्टि से एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर विधि-विधानों का उल्लेख करता है। यही इस ग्रन्थ का वैशिष्ट्य है।

-------------------x-----------------

कला तीर्थ

रामजीत जैन

ऐसे स्थानों को जा कला, पुरातत्व और इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, वह तीर्थ क्षेत्र माने जाते हैं। पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान को कला तीर्थ कहा जाता है। गोपाचल सिद्ध क्षेत्र व अतिशय क्षेत्र के साथ कला क्षेत्र भी है। भारत में बहुत कम ऐसे पवित्र स्थान पाये जाते हैं जिनमें इन तीनों का संगम हो।

गोपाद्रौ देवपत्तने : वि. सं. १४६९ (सन् १४१२ ई.) में कुन्दकुन्दाचार्य द्वारा रचित 'प्रवचनसार' की आचार्य अमृतचन्द्र कृत 'तत्व दीपिका' टीका की एक प्रतिलिपि वीरमेन्द्र देव के राज्य काल में ग्वालियर में की गई थी। इसके प्रतिलिपि काल और प्रतिलिपि स्थल के विषय में उसमें निम्नलिखित पंक्तियाँ प्राप्त होती है :–

विक्रमादित्य राज्येऽस्मिश्चतुर्दपरेशते।
नवषष्ठया युते किंनु गोपाद्रौ देवपत्तने।।

वीरमेन्द्रदेव ग्वालियर के तोमर राजा (सन् १४०२-१४२३ ई.) थे और टीका के प्रतिलिपिकार ने उनके गढ़ गोपाद्रि को 'देवपत्तन' कहा है। जैन तीर्थ मालाओं में भी ग्वालियर का उल्लेख प्रसिद्ध जैन तीर्थ के रूप में किया गया है। इन उल्लेखों से ज्ञात होता है कि ग्वालियर जैनियों के लिये 'देवपत्तन' और इसकी गणना जैन तीर्थों में की जाती थी।

अपभ्रंश भाषा के महाकवि रइधू ने 'पासणाह चरिउ' में लिखा है–

जहिं सहहि णिरंतर जिण-णिणेय। पंडुर सुवण्ण धमयड-समेय।

(भावार्थ — जहाँ पांडुर एवं सुवर्ण वाली अनेकों पताकाओं से युक्त जिन मन्दिर निरन्तर शोभायमान रहते हैं) 'सम्मत्तगुणणिहाण कव्व' ग्रन्थ में उक्त कवि ने नगर वर्णन प्रसंग में लिखा है– उसने (राजा

डूंगरसिंह) अगणित मूर्तियों का निर्माण कराया था। उन्हें ब्रह्मा भी गिनने में असमर्थ है। श्री हेमचन्द्रराय का निम्न कथन दृष्टव्य है—

"He (Dungar Sen) was great patron of the Jaina Faith and held the Jainas in high esteem. During his eventful reign, the work of Carving Jain immages on the rock of fort of Gwalior was taken in hand, it was brought to completion during the reign of his successor Raja Karan Singh or (Kirti Singh). All statues of the Jaina pontiffs of autiquity gaze their tall niches like mighty guardians of the great Fort and its surroundings land scape. Babar was much annoyed by those rock sculptures as to issue orders for their destructions in 1557 A.D."

(भावार्थ— राजा डूंगरसिंह जैन धर्म का महान पोषक था। उसके राजकाल में ग्वालियर दुर्ग की चट्टानों में जैन मूर्तियों के उत्कीर्ण करने का कार्य प्रारंभ किया गया था जो उसके उत्तराधिकारी राजा कीर्तिसिंह के काल में पूरा हुआ। विशाल अवगाहना वाली प्राचीन जिन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ सशक्त संरक्षकों की भाँति महान दुर्ग एवं उसके आस पास की भूमिपर दृष्टि रखते हुए प्रतीत होती हैं। चट्टानों में खुदी हुई मूर्तियों की शिल्पकारी देखकर बाबर अत्याधिक क्रोधित हुआ और सन् १५५७ ई. में उसने उन मूर्तियों को नष्ट करने का आदेश दिया।)

यह ऐतिहासिक सत्य है कि तोमर वंश के राजा डूंगरसिंह ने विक्रम संवत् १४८१ में राज्य संभाला। उसी समय से किले की चट्टानों में जिन मूर्तियों का उत्कीर्ण करने का काम प्रारंभ हुआ जो कला एवं पुरातात्विक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसी कारण गोपाचल को कला तीर्थ माना जाता है।

गोपाचल के जिन मन्दिर एवं प्रतिमाएँ : पर्वतराज पर जिन प्रतिमाओं की संख्या १५०० के लगभग है। इनमें छः इंच से लेकर ५७ फुट तक की मूर्तियाँ सम्मिलित हैं। महावीर धर्मशाला नई सड़क (विवेकानन्द मार्ग) से किले का उरवाई द्वार लगभग ४ किलो मीटर है। इस उरवाई द्वार पर किले

की बाहरी दीवार में कुछ अर्ध निर्मित मूर्तियां है संभवतः मूर्तियाँ बनाने की योजना रही होगी, किन्तु कुछ कारणवश छत्र आदि खोदकर उन्हें अधूरा छोड़ दिया गया। दरवाजे के बाई ओर सर्व प्रथम पहाड़ में तीन खड़गासन मूर्तियाँ मिलती हैं। तीनों कमलासन पर खड़ी हैं। तीनों मूर्तियों के मध्य स्थानों में शिलालेख उत्कीर्ण हैं। पहाड़ के सभी शिलालेखों का लिखना तो संभव नहीं है, केवल यहाँ एक शिलालेख की जानकारी दी जा रही है—

सं. १५१० वर्षेमाघ सुदी ८ सोमे गोपाचल दुर्गे तोमर वन्शान्वये महाराधिराज राजा श्री डूंगरेन्द्र देव राज्य पवित्रमाने श्री काष्ठासंघ माथुरान्वये भट्टारक श्री गुणकीर्ति देवास्तत्पट्टे श्री यशकीर्ति देवास्तत्पट्टे श्री मलयकीर्ति देवास्ततो भट्टारक गुणभद्रदेव पंडितवर्य रइधू तदाम्नाये अग्रोतवंशे वासिल गोत्रे साकेलहा भार्या निवारी तयोः पुत्र विजयष्ट शाह सहजा तत्पुत्र शाह नाथूतेउ नाथू पुत्रीं मालाद्रे भौंसा तेऊ पुत्री गोविन्ददेव जी महारथी वालमती साधु मालहा भार्या सिरो पुत्र संघातिपति देव मार्या मालेही द्वितीय लोछि तयोः पुत्र शंकर मसीजाकर मासारे पति पुत्रनेम भार्या हेमराजहि चतुर्थ साहीगा पुत्र सेही माघ पुत्र शंकर मसीजाकर मासारे पति पुत्रनेम भार्या हेमराजहिं चतुर्थ साहीगा पुत्र सेही माघ पुत्र वीजा जोडसी कुमरा पन्नवसा चेला पुण्याधिदा द्वितीया भोला तृतीया अलूसा जीणा पुत्र साणिकुटी धारतरू सहाराषु डाली पुत्र देवीदास इस वंश निर्देश एतेषां मध्ये साधु श्री माल्हा पुत्र संघातिपिति देउताय पुत्र संघातिपित करमसीहा श्री चन्द्रप्रभु जिनविंब महाकाय प्रतिष्ठापिंत प्रणमति कर्णसी श्री साध्वी वीर जिनपद चक्र अंगुष्ठ मात्र विमान जिनसा क्रिया प्रतिष्ठापयतो महुतया कुलं वलं राज्यमनंत सौरव्यं तवस्य विच्छित्तिरथो विमुक्तिः। शुभम् भवतु देववृषयोः।।

यह शिलालेख लगभग पौने दो फुट लम्बा और इतना ही चौड़ा है। इसमें कुल १५ पंक्तियाँ हैं।

बाई ओर की इन प्रतिमाओं का विवरण इस प्रकार है—तीर्थंकर मूर्ति-दोनों ओर इन्द्र इन्द्राणी है। फिर तीर्थंकर चन्द्रप्रभ की मूर्ति है। दोनों ओर इन्द्र इन्द्राणी है। इसके बाद तीर्थंकर महावीर की मूर्ति है। उसके बगल में इन्द्र विनम्र मुद्रा में खड़ा है।

इस उरवाई समूह में विशाल खड्गासन मूर्तियां ४०, पद्मासन मूर्तियां २४, स्तम्भों और दीवारों पर लघुतीर्थंकर मूर्तियाँ ८४०, उपाध्याय और साधु मूर्तियाँ १२ हैं। ४ चैत्य स्तम्भ भी बने हैं। उनके ऊपर दीवार में शिखर बने हैं। इस समूह में कुल १० शिलालेख है जिनमें से कई तो वि. संवत् १५१० और १५२२ के हैं।

उरवाई की ओर जाने पर दायीं ओर की मूर्ति समूह के सम्बन्ध में ज्ञातव्य निम्न प्रकार है—दायीं ओर से बायीं ओर को—इस समूह में ४७ खड्गासन मूर्तियाँ हैं, ३१ पद्मासन मूर्तियाँ, ६ यक्ष और देवी मूर्तियाँ, ६ चैत्य स्तम्भ और शिलालेख हैं। इस पर्वत की मूर्तियों में सबसे विशाल अवगाहना वाली मूर्ति भगवान् ऋषभदेव की है जो इसी समूह में है जिसकी अवगाहना ५७ फुट की है तथा पैरों की लम्बाई ९ फुट है। यह मूर्ति ही बावनगजा के नाम से प्रसिद्ध है। श्वेताम्बर आचार्य शीलविजय और सौभाग्य विजय ने अपनी तीर्थमाला में इस मूर्ति को बावन गजा लिखा है तथा अन्य तीर्थमालाओं में भी बावनगजा लिखा है। इस कारण बावनगजा प्रसिद्ध हुई है। बाबर ने आत्मचरित (बाबर नामा) में इस मूर्तिको ४० फुट लिखा है। इस मूर्ति के पादपीठ के सारे भाग पर मूर्ति लेख है। मूर्ति लेख के अनुसार इस मूर्ति के प्रतिष्ठाकारक साहू कमलसिंह तथा प्रतिष्ठाचार्य रइधू थे। यहां पांच मूर्तियाँ ऐसी हैं, जिनमें महाराज श्रेयांस द्वारा प्रतिष्ठित ऋषभदेव को आहार देते हुए प्रदर्शित किया गया है। इस समूह में एक कोष्ठक में चैत्यालय बना हुआ है, जिसमें तीन वेदियाँ बनी हुई हैं। प्रत्येक वेदी के ऊपर शिखिर निर्मित है एक स्थल पर संभवतः मुनियों के ध्यान के लिए एक गुफा और कक्ष बने हुए हैं। एक मूर्ति तीर्थंकर माता की बनी हुई है जो उपधान के सहारे शयन मुद्रा में दीख पड़ती है। सम्भवतः यह स्वप्न दर्शन के अवसर की मूर्ति है। कई स्थानों पर दीवार में लघु मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। एक स्थान पर ७१ मूर्तियाँ बनी हैं। सब मूर्तियों की गणना करना संभव नहीं लगता। कुछ मूर्तियाँ अस्पष्ट और अर्धनिर्मित हैं। कुछ बड़ी मूर्तियाँ भी अर्धनिर्मित दशा में हैं। शिल्पी को उन्हें पूर्ण करने में क्या बाधा आई होगीं, यह अनुमान के बाहर है।

आगे बढ़ने पर दूसरा बड़ा द्वार मिलता है। द्वार के दोनों ओर दो खड्गासन तीर्थंकर मूर्तियाँ खड़ी हैं, किन्तु अब इनकी कमर तक ईंटें चुन दी गई है तथा मूर्तियों पर सफेदी कर दी गई है।

उरवाई गेट से सिंधिया स्कूल होते हुए आगे बढ़ने पर दो देवस्थान सास का बड़ा मन्दिर और बहू का छोटा मन्दिर मिलते हैं। सास-बहू के इन दोनों मन्दिरों के गर्भ गृह में कोई मूर्ति नहीं हैं। बड़ा मन्दिर १०५ फुट लम्बा, ७५ फुट चौड़ा और १०० फीट ऊंचा है। मन्दिर के बीच का हॉल ३२ फुट लम्बा और ३१ फुट चौड़ा है इसमें एक चौकोर चबूतरा बना है चारों कोनों पर स्तम्भ हैं। स्तम्भों और दीवारों पर विविध प्रकार के दृश्य अत्यन्त कला पूर्ण रीति से उत्कीर्ण किये गये हैं। द्वार और छत का अलंकरण दर्शनीय है। यहाँ पर लगे हुए एक शिलालेख से प्रगट होता है कि कछवाहा राजपूत महिपाल ने इसे सं. १०९३ में पूर्ण किया। शिलालेख से यह स्पष्ट नहीं होता कि यह मन्दिर किस देव या भगवान को अर्पण किया गया था। किन्तु परम्परागत मान्यता है कि उक्त भक्त राजपूत ने अष्टाह्विका वृत्त के उपलक्ष में नन्दीश्वर द्वीप की अनुकृति पर यह जैन मन्दिर बनवाया था। नन्दीश्वर द्वीप जाने वाले देव-देवियों की मूर्तियाँ नृत्य एवं विभिन्न मुद्राओं में मन्दिर के सभी भागों में उत्कीर्ण करायी गई। संभवतया मुस्लिम काल में इन मूर्तियों का भंजन कर दिया गया। यही कहानी इसके निकट बने छोटे मन्दिर की है। ये मूलतः ही जैन मन्दिर रहे हैं। किन्तु कुछ आधुनिक इतिहासकार सास बहू के स्थान पर सहस्त्रबाहु का मन्दिर बनाकर इन्हें विष्णु मन्दिर सिद्ध करते हैं। इसके सम्बन्ध में कोई अभिलेख या प्रमाण नहीं। हमारी मान्यता है कि ये दोनों मन्दिर सेतवाल जैन जाति के सहस्त्रबाहु गोत्र के व्यक्ति द्वारा बनवाये गये हैं। इसलिये सहस्त्रवाहु मन्दिर का अपभ्रंश होकर सास-बहू के मन्दिर के नाम से प्रचलित हो गया। स्मरण रहे कि जैन समाज की ८४ जातियों की गणना में एक सेतवाल जैन जाति भी है और इसके १८ गोत्रों में एक गोत्र सहस्त्र बाहु है।

इस मन्दिर के आगे बढ़ने पर तेली का मन्दिर मिलता है। इस मन्दिर का निर्माण नौवीं शताब्दी में द्रविण शैली में हुआ है। यह १०० फुट ऊंचा है।

इसमें भी वेदी सूनी पड़ी है। इसके चारों ओर वाटिका में जैन मन्दिर या मन्दिरों के पाषाण स्तम्भ तथा तीर्थंकर मूर्तियाँ रखी हुई हैं। ये मूर्तियां किस मन्दिर की हैं तथा खुले मैदान में क्यों रखी गई है। यह ज्ञात नहीं हो सका। हमारा अनुमान है कि यह सामग्री तेली के मन्दिर और उसके निकट बने हुए एक जीर्ण मन्दिर की है। तेली का मन्दिर भी मूलतः जैन मन्दिर है। कुछ लोग इसका नाम तिलंगना (तैलंग) कल्पित करके इसे विष्णु मन्दिर मानते हैं। हमारी स्पष्ट धारणा है कि राजा आम की वैश्य पत्नी से उत्पन्न राज कोठारी के वंशज तोलाशाह ने इसे बनवाया है। राज कोठारी को आम के गुरु जैन आचार्य वप्पभट्ट सूरी ने जैन धर्म में दीक्षित किया था जो ओसवाल जाति में सम्मिलित हो गया था। उसकी आठवीं पीढ़ी में तोलाशाह हुआ। यह बहुत बड़ा न्यायी, ज्ञानी, मानी और धनी था। जैन धर्म का बड़ा अनुरागी था। तोलाशाह के मन्दिर का अपभ्रंश रूप तेली का मन्दिर नाम से प्रसिद्ध हो गया। यह जैन मन्दिर है।

इस मन्दिर के निकट एक जीर्ण-शीर्ण कमरा बना हुआ है। सन् १८४४ में कनिंधम ने इस ३५ फुट लम्बे और १५ फुट चौड़े कमरे को जैनियों के २३ वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का मन्दिर माना है इसका निर्माण सन् ११०७ में हुआ बताया गया है। इसके पास ही सिक्खों का गुरुद्वारा बना हुआ है। इसके सम्बन्ध में बड़ी रोचक कहानी प्रचलित है। मुगल सम्राट जहांगीर ने सिक्खों के छठवें गुरु हरगोविन्दसिंह को बन्दी बनाकर इस किले में रखा था। थोड़े दिनों के बाद जहाँगीर बीमार पड़ गया। कुछ लोगों ने बादशाह को परामर्श दिया कि गुरु को छोड़ दो। जहाँगीर ने तदनुरूप आदेश दे दिया। किन्तु गुरु ने अपने साथियों को पहले रिहा करने की शर्त रखी। अपनी बढ़ती हुई बीमारी के कारण जहाँगीर को गुरु की बात माननी पड़ी। जिन लोगों ने गुरु का दामन पकड़ा, वे सब मुक्त कर दिये गए। इस लिए गुरु का नाम दाता बन्दी छोड़ पड़ गया। इस कारण सिक्खों के लिए यह तीर्थ स्थान बन गया और उन्होंने इस स्मृति में यहाँ गुरुद्वारा बना लिया है।

आगे मान मन्दिर मिलता है। इस महल से आगे गूजरी महल बना हुआ है। गूजरी महल से ग्वालियर गेट होते हुए एक पत्थर की बावड़ी पर जाते हैं।

यह स्थान फूलबाग गेट से सगभग २ किलो मीटर तथा ग्वालियर गेट से ३ किलो मीटर दूर है। पक्की सड़क से किले की बाहरी दीवार तक, जहां यह स्थान है, ३ फलांग की चढ़ाई है। मार्ग पक्का है, किन्तु चढ़ाई थकाने वाली है। यही किले की प्राचीर के बाहरी भाग में, एक कोने में एक पत्थर की खुदी हुई प्राकृतिक बावड़ी है। यह लगभग २० फुट लम्बी और इतनी ही गहरी है। इसमें किसी अज्ञात स्त्रोत से जल बारह महीने निरन्तर आता रहता है। जल शीतल एवं मीठा है। बावड़ी एक प्राकृतिक गुफा में बनी हुई है। दुर्ग की इस प्राचीर के बाहर विशाल अवगाहना वाली खड्गासन और पद्मासन तीर्थंकर मूर्तियाँ पहाड़ में उत्कीर्ण की गई हैं। यह दक्षिण-पूर्व समूह कहलाता है। यह समूह समुन्नत मूर्तिकला की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह समूह लगभग दो फर्लांग के क्षेत्र में फैला हुआ है। इस समूह की मूर्तियां उरवाई द्वार की मूर्तियों की अपेक्षा अधिक कला-पूर्ण, सुघड़ एवं सौम्य हैं तथा अत्यन्त कुशल, अनुभवी और निष्ठान्त शिल्पियों द्वारा निर्मित की गई प्रतीत होती हैं। मूर्तियों का सौष्ठव, अंग विन्यास और भावाभिव्यंजना सभी कलाकारों की निपुणता के मूक साक्षी हैं। यहाँ मूर्तियों के पीछे की दीवार को तराशकर चिकना बनाया गया है, मूर्तियों के अभिषेक के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं तथा मूर्तियों की ग्रीवा के सामने पाषाण पट्टिकायें बनी हुई हैं जिन पर खड़े होकर सुगमता से अभिषेक किया जा सकता है। ९ मूर्तियों के आगे ऊँची दीवाल उठाकर और मूर्तियों के ऊपर शिखर बनाकर जिनालय का रूप प्रदान किया गया है। मूर्तियों के पीछे भामण्डल, सिर से ऊपर छत में चन्दोवा और हाथों में कमल बने हुए हैं जो अत्यन्त कला पूर्ण हैं प्रत्येक मूर्ति के दोनों ओर गज लक्ष्मी का अंकन किया गया है जिनमें गजराज अपनी सूँड़ में कलश लिए हुए भगवान का अभिषेक करते दिखाई पड़ते हैं।

बावड़ी के बगल में दायी ओर पद्मासन पार्श्वनाथ मूर्ति है। इसके ऊपर बहुत सुन्दर छत्र बना हुआ है। इसके आगे २० से ३० फुट ऊँची खड्गासन मूर्तियां हैं। पाद पीठ पर बने हुए लांछनों के अनुसार ये मूर्तियां भगवान १. शान्तिनाथ, २. पद्मप्रभ, ३. शान्तिनाथ, ४. पद्मप्रभ, ५. बाहुबली, ६. शान्तिनाथ, ७. पद्मप्रभ, ८. नेमिनाथ और ९. शान्तिनाथ की है।

इनसे आगे चलकर ९ मूर्तियों के आगे दीवार में द्वार बने हैं और ऊपर शिखर बने है जो मन्दिर प्रतीत होते हैं। ये मूर्तियां भगवान १. कुन्थनाथ, २. सुपार्श्वनाथ, ३. पद्मासन, ४. आदिनाथ पद्मासन, ५. शान्तिनाथ खड्गासन, ६. व, ७. पद्मासन, ८. शान्तिनाथ और ९. संभवनाथ की हैं।

इनसे आगे पुष्पदन्त, नेमिनाथ और ऋषभदेव की खड्गासन तथा पद्मप्रभ की पद्मासन मूर्तियाँ हैं। आगे और भी अनेक छोटी मूर्तियाँ है। एक मूर्ति के आगे दोनों ओर मान स्तम्भ बने हैं। पास में ही एक गुफा मिलती है। इसमें छोटी-बड़ी लगभग १२५ प्रतिमाएँ दीवालों में उत्कीर्ण हैं। इसके पश्चात् तीन खड्गासन मूर्तियाँ बनी हुई हैं। अन्तिम दो गुफाओं में कुछ मूर्तियाँ हैं। दीवालों में उत्कीर्ण हैं। इनमें ऋषभदेव की एक खड्गासन मूर्ति है जो ३५ फुट ऊँची और १० फुट चौड़ी है। सभी मूर्तियाँ खण्डित हैं। मुगल बादशाह बाबर ने इन सभी मूर्तियों को खण्डित कर दिया था। किन्तु पद्मासन भगवान पार्श्वनाथ की ३५ फुट ऊँची और ३० फुट चौड़ी प्रतिमा को देखकर हतप्रभ हो गया और उसके क्रूर हाथ निष्क्रिय हो गये। इस मूर्ति के ऊपर उसकी क्रूरता का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इसका क्या कारण था? इस सम्बन्ध में विविध और विचित्र किवदन्तियाँ प्रचलित हैं। तथ्य जो भी हो, इसमें सन्देह नहीं कि दुर्ग की लगभग सभी मूर्तियाँ खण्डित हैं, किन्तु यह अखण्डित है। पद्मासन मूर्तियों में यह भारत की सबसे विशाल मूर्ति है। इसके अतिरिक्त एक और मूर्ति अखण्डित है, वह है भगवान् महावीर की मूर्ति जो बावड़ी के निकट पार्श्वनाथ भगवान् की मूर्ति के निकट विराजमान है।

क्रमशः

वैर का विपाक

समरादित्य अब बहुत बार पिता के पास जाने लगे। विनय से उनके पास बैठते है और उनका मन प्रसन्न रहे ऐसे ही वे बाते करते हैं। समरादित्य जानते हैं कि उनकी विचार श्रेणी के साथ माता-पिता सहमत-सम्मत नहीं हैं। वे विरोधभाव ही पोषण कर रहे हैं। और दोनों नववधुओं को संयम में स्थिर किए बाद तो माता-पिता का असंतोष मन ही मन में घुमड़ रहा है। अतः समरादित्य अधिक से अधिक सम्पर्क साधने और अपना दृष्टिकोण उन्हें समझाने का उद्यम करते। उसे विश्वास है कि यदि मेरा हृदय स्वच्छ है, मेरी विचारशैली प्रामाणिक और आत्महितसाधक है तो आज नहीं तो कल दो दिन बाद भी माता-माता मुझे राजीखुशी से पूरे उल्लास से विदा दिए बिना नहीं रहेंगे।

लोकमाता जैसी गंगा नदी एक बार पत्थरों की कठिन अंतरालों में कैद हुई पड़ी थी। और राजा भगीरथ ने उसे मुक्त किया। कारामुक्त होते ही उसने भारतभूमि को शस्य-श्यामला, फल-फूल-कुसुमित कर दिया। समरादित्य को गृहवास में रहा देख किसी को ऐसा लगे कि ज्ञान-चारित्र की गंगा मात्र कितने ही अंतरायों के कारण एक स्थान पर स्थिर हो कर पड़ी है। समरादित्य चाहे पुरुषसिंह की गोद में ही बड़ा हुआ हो, सुंदरी राणी ने चाहे उसे पालने में झुलाया ही हो, परन्तु सत्य तो यह है कि वह संसार का तारक है, सब का मित्र और सबका मार्गदर्शक है। वह सदा के लिए उज्जयिनी के अंतःपुर में, संसार का कैदी बनकर नहीं रह सकता है।

एक दिन पुरुषसिंह ने प्रसंगोपात बात निकलने पर कहाः हे बेटा! मुझे केवल एक बात का ही खेद रहा करता है। उज्जयिनी के सिंहासन पर आज तक तेरे जैसा विरागी कोई नहीं बैठा। राज-परंपरा का वारसा तुम किस प्रकार से निबाहोगे?

जैसा होता आया है वैसा ही होता रहे तो हे पिताजी! संसार कितना कंगाल हो जाए? अपढ़ पिता का पुत्र यदि निश्चय करे कि मेरे कुल में कोई पढ़ा

नहीं है, सभी अपढ़ रहे हैं, अतः मुझे भी अपढ़ ही रहना चाहिए और गरीब माता-पिता का पुत्र यह निश्चय करे कि मेरे माता-पिता गरीब थे इसलिए मुजे भी गरीब ही रहना चाहिए। कुलपरम्परा को श्रीमंत-धनवान बनकर दाग नहीं लगाना चाहिए तो संसार एक खड्डु जैसा ही बन जाए। जो पहले नहीं हुआ वह कभी हो ही नहीं सकता है ऐसा निर्णय तर्क से भी दूषित है। उज्जयिनी के उत्तराधिकार को मैं अपने पुरुषार्थ से अधिक उज्ज्वल नहीं बनाऊंगा यदि ऐसा आपको लगता हो तो उसमें आपका नहीं अपितु मिथ्या मोह का ही दोष है। रंच मात्र भी उकसित हुए बिना मानों स्वयं को ही कह रहा हो ऐसे समरादित्य ने कहा।

परन्तु भोगोपभोग के विषय में तुम इतने अधिक उदासीन क्यों दीखते हो? पिता ने तुरत ही पूछा।

भोगोपभोग और ऐश्वर्य में मुझे बिलकुल ही रस नहीं है ऐसा तो मैं कैसे कह सकता हूँ? परन्तु भोग अथवा ऐश्वर्य की ओर जैसे ही मैं हाथ फैलाता हूँ और उन्हें अपनाने जाता हूँ कि उसी समय मानो सिर पर भारी पहाड़ चक्कर लगाता हो, उसकी शिलाएं खिसक जाती हों और मैं उनके नीचे दबकर मर जाता हूँ ऐसा दृश्य मेरी दृष्टि के सामने खड़ा हो जाता है। भोग और ऐश्वर्य के संडासे में फंसे असंख्य स्त्री-पुरुष इस पर्वत की शिलाओं के नीचे दबे-रोते-कलकल करते और सर्वनाश प्राप्त होते हैं। परन्तु उसके परिणाम स्वरूप जो बुरी दशा होती है उसी से मुझे कंपकंपी छूट जाती है। मेरे औदासीन्य का कारण भी यही है।

इस प्रकार समरादित्य विद्वता अथवा पांडित्य का दंभ किए बिना ही सरल भाव से पिता को अपनी मनःस्थिति समझाने का प्रयत्न किया करता था।

एक बार ऐसी घटना घटी कि यहाँ पितापुत्र बैठे हुए थे वहाँ मध्यान्ह की शांति को चलायमान करता हूआ अचिंत्य आकंद सुनाई दिया। समरादित्य और पुरुषसिंह की बातचीत में इससे खलल पड़ गया।

खोज करने पर मालूम हुआ कि पुरंदर नामा भट्ट-पुरोहित अचानक मरने की स्थिति को पहुँच गया है और उसके साथ ही उसके घर का एक कुत्ता भी अंतिम सांस ले रहा है ऐसा भी पता चला।

भला-चंगा-निरोग और सहनशील नवयुवक पुरंदर यकायक किस प्रकार मृत्यु के पंजे में पहुँच गया और साथ ही कुत्ता भी क्यों सहगमन कर रहा है, यह पुरुषसिंह कुछ भी समझ नहीं पाया। समरादित्य को भान हुआ कि इसमें कुछ न कुछ जादू-टोना है या कोई गुप्त षड़यंत्र! परन्तु ऐसा झटपट कहना उचित नहीं समझ उसने मात्र इतना ही कहा कि पिता जी मैं मानता हूँ कि पुरंदर और कुत्ते दोनों ही को किसी ने विष दे दिया है। इनको बचाना हो तो हमें राजवैद्य को तुरत ही वहाँ भेजना चाहिए।

पुरुषसिंह ने यह सलाह मान ली। राजवैद्य ने शीघ्रप्रभावी उपचार द्वारा दोनों को विषमुक्त किया और दोनों ही बच गए।

समरादित्य की दीर्घ दृष्टि के लिए पुरुषसिंह को बहुत प्रसन्नता हुई। वह सोचने लगा कि किसी को भी नहीं केवल इस समरादित्य को ही विषप्रयोग की गुप्त बात कैसे सूझी?

पिता द्वारा पूछे जाने पर उत्तर में, संसार की सामान्य घटनावली पर से बांधे अपने अभिप्राय को व्यक्त करते हुए समरादित्य ने कहा:

सामान्य तौर से परस्पर के रागद्वेष के कारण ही ऐसे षड़यंत्र रचे जाते हैं। पुरंदर की स्त्री के अतिरिक्त उसके भोजन में विष कौन मिला सकता है और विषप्रयोग के सिवा पुरंदर जैसा युवक मृत्युशैया पर कैसे पहुँच सकता है? कुत्ते की बात यद्यपि ठीक-ठीक समझ में नहीं आती है परन्तु कितनी ही बार घर के छोटे से छोटे जंतु, पशु प्राणी आदि हमारे पूर्व के स्नेही संबंधी अथवा रागी होते हैं। अज्ञान का पटल बीच में आ जाता है इससे हम उन्हें पहचान नहीं सकते हैं। बहुतबार तो हमारी शांति अथवा व्यवस्था में वे विघ्नरूप लगते हैं। श्वान को विष देने में पुरंदर की स्त्री ऐसी ही किसी भावना से प्रेरित हुई होगी। यह स्त्री अपने जिस दिवंगत प्रेमिक की अहोनिश उपासना करती है, जिसकी मूर्ति बनाकर वह पुष्पों से पूजती है वही प्रेमिक श्वान का देह धारण कर, मूर्ति के आसपास घूमता है। परन्तु यह सब बात उसे समझ में कैसे आ सकती है? सत्य तो यह है कि मूर्ति को मलिन करनेवाला श्वान उसका दिवंगत प्रेमी ही है और फिर भी उसी पर

वह विषप्रयोग करती है। पिताजी! संसार के काम, क्रोध, मोह का यह कितना करुण इतिहास है?

समरादित्य के इस प्रकार के निवेदन पर से पुरुषसिंह ने पुरंदर भट्ट को विष दिए जाने की जब खोज की तो उसमें अनेक विचित्र बातें प्रगट हो गईं। समरादित्य का निदान ठीक था, ऐसा उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया।

फिर जैसे पिता-पुत्र का संपर्क गाढ़ से गाढ़तर होता गया और समरादित्य की निर्मल दृष्टि की पारदर्शिता समझ में आने लगी तो पुरुषसिंह को भी ऐसा लगने लगा कि समरादित्य पूर्वजन्म का कोई महायोगी है। ऐसे संवेग-रंग से रंगे महारथियों को मोहवश जकड़ कर रखना एक प्रकार स्वार्थवशता ही है।

पानी में सदा भीजे रहते चकमक पत्थर को देखकर ऐसा लगता है कि यह गीलापन उसके अंग-अंग में व्याप्त हो गया होगा। परन्तु बाहर निकाल लोहे के साथ टकराते ही उसके अंदर रही आग फूलझड़ के समान झरे बिना नहीं रहती है।

पुरुषसिंह चकमक का पत्थर था। समरादित्य के संपर्क से उसमें से चमक झड़ने लगी। एक दिन पुरुषसिंह ने ही समरादित्य से कहा:

हे पुत्र! तुम कहते हो वैसा संसार सत्य ही इंद्रजाल है। पुत्र होते हुए भी तुम मेरे गुरुस्थानी हो। तुम्हारे आत्मकल्याम में मैं अब अंतरायरूप नहीं बनूंगा। तुम अपनी माता की भी पूरी पूरी सम्मति समझ लो।

समरादित्य की तपश्चर्या सफल हो गई। उज्जयिनी के गगनमंडल में देवदुंदुभी गरज उठी। अकेले समरादित्य ने ही नहीं अपितु उसके पिता पुरुषसिंह और सुंदरी माता ने भी संसार के मायावी बंधनों को छेदकर आत्महित साधना का राजमार्ग स्वीकार कर लिया।

उज्जयिनी की प्रजा ने उस दिन खूब धूमधाम से उत्सव मनाया। पुरुषसिंह को दूसरा पुत्र नहीं होने से उज्जयिनी का राजमुकुट पुरुषसिंह के एक भानजे मुनिचन्द्र को पहना दिया गया।

संसारत्यागियों, तपस्वियों और साधकों के संघ उस युग में भारतभूमि में चारों दिशाओं में, उच्च गिरिशिखरों से बहने वाली जलधाराओं की तरह चलते रहते थे। ग्राम-नगर अथवा संनिवेश आदि का उनके मन में कोई भेद नहीं था। एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुँचने की भी उन्हें कोई आतुरता या ताकीद नहीं थी। अपनी चरणरज से भूमि को तीर्थरूप बनाते ये नरपुंगव, अपने से उच्च कोटि के साधकों के पास से जो कुछ भी प्राप्त करने का हो वह प्राप्त कर, जिज्ञासुओं को देने जैसा हो वह दे सतत् भ्रमण करते रहते थे। विकट अरण्य, जल-भरपूर नदी, गगनचुम्बी पर्वत कोई इनको अंतराय नहीं कर सकता था। हिंसक पशु अथवा घातकी हत्यारे भी इनके वायु जैसे अप्रतिबद्ध विहार को अवरुद्ध नहीं कर सकते थे।

तपस्वी और चिंतक स्थान-स्थान पर भ्रमण करते हुए लोगों को मात्र वैराग्य की वाणी सुनाते होंगे, संसार के कर्म में आकंठ डूबे नर-नारियों पर केवल दया की वर्षाकर बादलों की तरह ही अदृश्य हो जाते थे ऐसा नहीं था। ये थे चलते फिरते विश्वविद्यालय। जहाँ जाते वहाँ ज्ञान-विराग-संवेग की परब प्याऊ जमा कर बैठते थे। थकने अथवा कंटालने के बिना ही विरल सत्य ये लोगों के गले उतारते। उद्धार करने की वृत्ति से ही यदि ये विचरते होते तो इनका बहुमान और स्वागत करने वाला समुदाय कदाचित् इनसे अघा जाता। ये त्यागी और तपस्वी अपने त्याग-विराग अथवा ज्ञान का प्रदर्शन करना भी नहीं चाहते थे। और न बड़े चमत्कार कर बताने की ही ये दुराशा रखते थे। वे तो परिषह, उपसर्ग, कठिनाइयों और आपदाओं को चुनौती देते, भूख-तृषा-थकान सभी पर अपनी विजय फहराते जितना भी संभव होता लोक संपर्क साधन करते थे। इसमें अभिमान अथवा उद्धत्ताई जैसा कुछ भी नहीं था। इसीलिए कोई साधु-मुनिराज अथवा आचार्य के गांव के निकट पहुँचने की बात सुनते ही, मेघोतेजित मोर की तरह लोग नाचना आरंभ कर देते थे। उज्जयिनी से विहार कर अयोध्या की ओर जाते हुए महामुनि समरादित्य को कोई देखे तो उसे सागर की अगाधता और हिमगिरि की अडिगता ही मूर्त हो गई हो ऐसा लगता। संयम के भार को पुष्पगुच्छ की

भाँति उठाते, उपशम-रस का कदम कदम पर छिड़काव करते, ज्ञान के कोटि कोटि किरण द्वारा अज्ञानांधकार को भेदन करते प्रभासाचार्य के अग्रगण्य शिष्य समरादित्य की ख्याति कदाचित् ही किसी से अजानी रही होगी। वादी और जिज्ञासु इनकी बात करने की मोहक और मार्मिक शैली पर मुग्ध हो जाते थे। ये बोलते तो मानों पुष्पवर्षा हो रही है ऐसा लगता था।

मनुष्य जो अपने को पामर मान बैठा है, उसकी पामरता को दूर करना, आत्मा के अनंत सामर्थ्य का लोकसमूह के सामने विवरण करना, कुलाभिमानियों और सत्ताधिकारियों के मद का निवारण करना, राग, द्वेष, क्रोध, मोह, ममता के सूक्ष्म होने पर दुर्भेद्य बंधनों से सतत सबको जागृत रखने का ही इन महामुनि के विहार और व्याख्यान का मुख्य ध्येय रहता था। परंतु इनका यह कोर्य इतने में ही पूर्ण नहीं हो जाता था। चिकित्सक के पास जैसे तरह तरह के रोगी आते हैं और रोग का कारण तथा उसके निवारण के उपाय जानना चाहते हैं वैसे ही इस भव-रोग के चिकित्सकों के पास भांति भाँति के वादी और विद्यानुरागी आते थे। कोई लोकालोक का स्वरूप समझने को आता था तो कोई कर्म का बंध तथा मुक्ति का रहस्य उद्घाटन करने को आता था। कोई गृहस्थ जीवन और मुनि-जीवन की मर्यादाओं के विषय में पूछने आता था। सब के प्रश्नों का हार्द समझकर, श्रोता की योग्यतानुसार ये भ्रमणशील विद्यालय स्पष्टीकरण किया करते थे। लोगों की अज्ञानमिश्रित शंकाओं का समाधान करते हुए इनकी शांति और संयम की भी अनेक बार कसौटी हो जाती थी।

क्रमशः

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone: 2268 2655

English :

1.	Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:		
	Vol - 1 (satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
	Vol - 2 (satakas 3- 6)		150.00
	Vol - 3 (satakas 7- 8)		150.00
	Vol - 4 (satakas 9- 11)		150.00
2.	James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)	Price : Rs.	100.00
3.	P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	15.00
4.	Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord,	Price : Rs.	15.00
5.	Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani	Price : Rs.	15.00
6.	Ganesh Lalwani - Jainthology	Price : Rs.	100.00
7.	Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains	Price : Rs.	100.00
8.	Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India	Price : Rs.	100.00
9.	Prof. S. R. Banerjee Introducing Jainism	Price : Rs.	
10.	Smt. Lata Bothra- The Harmony Within	Price : Rs.	100.00
11.	Smt. Lata Bothra- From Vardhamana- to Mahavira	Price : Rs.	100.00

Hindi :

1.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	20.00
3.	Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	30.00
4.	Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Smt. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Smt. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00
12.	Dr. Lata Bothra - Adinath Risabdev Aur Asthapad	Price : Rs.	250.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Smt. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Smt. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Smt. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 30530222, (Resi) 24543534

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

AMRITLAL & CO.
113B, Monohardas Katra
Ist floor, Kolkata - 700 007
Phone: (O) 2282-4649 (R) 2454-3534

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PSCO

MECHANICAL ENGINEERS & FABRICATORS.
Howrah Amta Road, Balitikuri Howrah

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
M/s. Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246, 30229372

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
M/s. D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033
Fax : 91-33-22702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9331019835, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL & BIKANER WOOLLEN MILLS
4, Srinath Katara, Main Road,
Bhadohi, Pin : 221 401 (U.P.)
Ph: (05414) 225178, 225778, Fax : (05414) 225378 (Bhdohi)
Phone : (0151) 2522404, 2225400, Fax : (0151) 2202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 534-535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane,
Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2274-6241/3474 (O) 2269-0581

In the Sweet Memory of my mother
LATE SOVABOTI DUSAJ
Shri Manilal Susaj
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone : 2237-5869 / 6476, Mobil : 98301017091, 9830142191

With Best Compliment from :-
SURANA WOOLEN PVT. LTD.
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street,
Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 001
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

With Best Wishes

INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES

40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

M.L. CHOPRA & CO.

Freight & Chartering Brokers

12-B, N. S. Road; Kolkata - 1

PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

With Best Compliments From-

STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS

13/5 Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

ABL INTERNATIONAL LTD.

1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.

Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN

"Mineral House"

27A, Camac Street, Kolkata - 700 016

Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663, Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER

147, M. G. Road

Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.

Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)

2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001

Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400

e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
M/s. Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

PABITRA KUMAR DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI VIJAY NAHATA
58, Walver Hallow Road
Upper Brook VileNew York - 11545
E-mail : nahata@aol.com

In the sweet memory of our mother
Late Karuna Kumari Kuthari
Jyoti Kumar Kuthari
12, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220 3142 (O) 2475 0995, 2476 1803 (R)
Ranjan Kumar Kuthari
1A, Vidya Sagar Street, Kolkata - 700 009
Phone : 2350 2173, 2351 6969

With Best Compliments from :-
22, Strand Road
2nd Floor
Kolkata - 700 001
Phone : 22131484, Fax : 22131488

JAIN FOOD
NOW AT
GARDEN CAFE
CALL FOR PARTY ORDER - 2439 9346
8/1 Alipore Road, Kolkata - 700 027
Phone : 2439 9346, 2280 1582
Garden Cafe Take Away : Unnayan, Survey Park
(E. M. Bye Pass) Phone : 2418 8852

In the memory of my father
Late Nawaratan mull Singhvi
N. M. SINGHVI
3E, UPASANA, 48, Kali Temple Road
Kolkata - 700 026, Phone : 2466 8186 (R)

In the sweet memory of our Father
Late Devi Singhji Kochar
Shashipal Kochar
Katra Ahluwala
Amritsar - 143 006

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of :

Anusandhan
Kolkata Nasta
Badsha Khan
Picnic
Raja
Shubham
Bhaonagari Ghantia
Jocker
Lajawab
Papri Ghantia
Rim Jhim
Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

2226-0881
2226-0883
2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 2 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK

45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025

(Near Jadu Babu's Bazar)

Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm

All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

With Best Compliments

Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXIX. No. 9 TITTHAYARA December 2005
Registered with the Registrar of Newspapers for India
Under R. N. No. 3018/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225